शिक्षण प्रक्रिया के रूप :-
(LEARNING & PROCESS)

व्यक्ति अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सीखना आरम्भ कर देता है वह जीवन-पर्यन्त सीखता रहता है। बालक शैशवावस्था के आरम्भ में बिल्कुल असहाय रहता है, उसका जीवन दूसरे पर निर्भर रहता है। धीरे-धीरे वह वातावरण के अनुकूल व्यवस्थित करने का प्रयत्न करता है। और सीखने में मूलप निहित होता है। 1- परिपक्वता ② अनुभूति से लाभ उठाने की योग्यता, तथा अभिवृद्धि का विकास, तथा उसकी उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह अभ्यास करता रहता है।

" अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता "

सीखने की परिभाषा

सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है जो व्यक्ति कार्य करने पर निर्भर रहता है। जब व्यक्ति की मानसिक अभिवृद्धि होती है। तो उसके विकास की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

गेट्स - " अनुभव द्वारा व्यवहार में रूपान्तरण लाना ही सीखना है।

पील " सीखना व्यक्ति में एक परिवर्तन है। जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण में होता है। "

गेने - मानव संस्कार अथवा क्षमता में ~~होने~~ परिवर्तन जो धारण किया जाता है, सरल है। तथा जो केवल वृद्धि की प्रक्रिया के रूप ही अयोग्य नही है।"

1- सीखना व्यवहार में परिवर्तन है।
2. मानव संस्कार तथा क्षमता में परिवर्तन

अधिगम एक प्रक्रिया है —

(Learning is a Process)

1- संकेत अधिगम → इस स्तर पर व्यक्ति बहुत ही सीधे तौर पर किसी सामान्य संकेत के प्रति अनुक्रिया करता है। संकेत अधिगम के विशिष्ट अनुक्रिया की जाती है। जिसे उद्दीपन अनुक्रिया

DATE

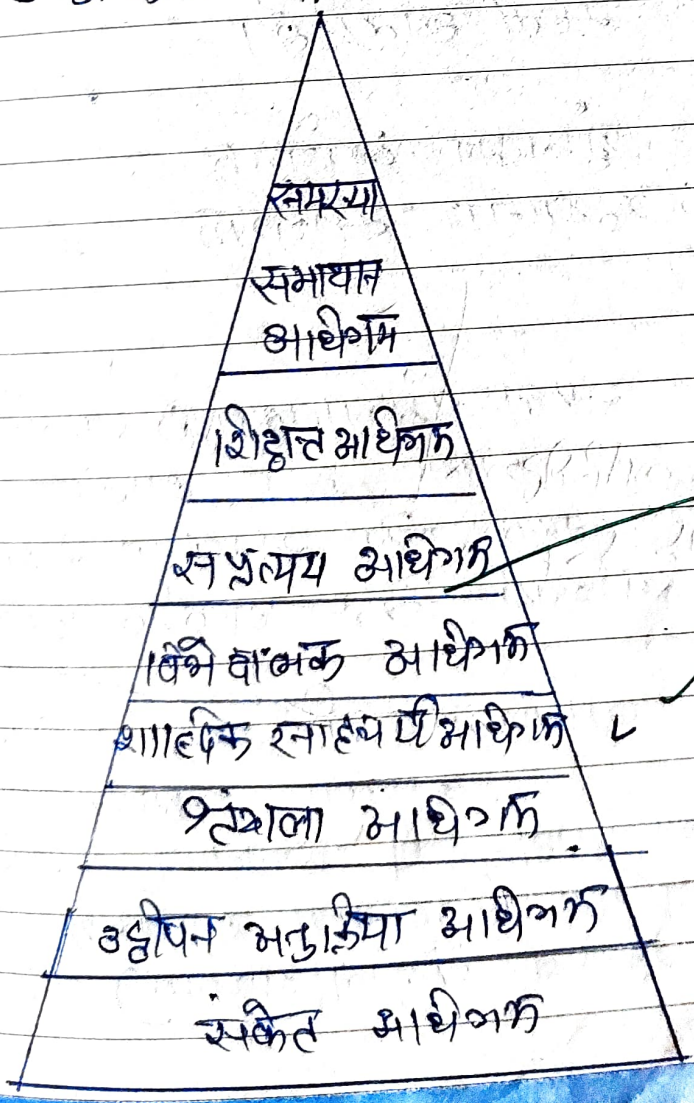

कहते हैं। इसके लिए पूर्व स्थितियाँ अज्ञात हैं।

~~उद्दीपन अनुक्रिया आधिगम~~ आधिगम दूसरे प्रकार का सीखना है। इसका सम्बंध स्किनर के उद्दीपन अनुक्रिया से है। जिसमे अनुक्रिया सतत एवं सम्भावित होती है। सक्रियता बढ़ जाती है। और उसे पुनर्बलित मिलता है। ~~पावलव~~ पावलव " उद्दीपन तथा अनुक्रिया में पूर्व निर्धारित सम्बन्ध नही रहता बल्कि अनुक्रिया का सम्बन्ध परिवेश एवं जीव की सक्रियता से रहती है।

उद्दीपन अनुक्रिया आधिगम

~~श्रृंखला आधिगम~~ पावलव प्रथम स्तर के आधिगम तथा द्वितीय स्तर के आधिगम या संकेत आधिगम उद्दीपन अनुक्रिया आधिगम से परिचय हो जाता है। श्रृंखला आधिगम की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। स्किनर इस प्रकार के आधिगम की व्याख्या की है। इसमे उद्दीपन अनुक्रिया लगातार उत्पन्न रहती होती है।

1. शाब्दिक श्रृंखला आधिगम
2. अशाब्दिक श्रृंखला आधिगम

श्रृंखला आधिगम सरल श्रृंखला ~~बद्ध~~ बद्ध सीखने के पश्चात ज्ञान को शाब्दिक रूप में प्रदान कर किसी वस्तु से सम्बन्ध स्थापित करने का कार्य शाब्दिक साहचर्य के अन्तर्गत आता है।

शाब्दिक साहचर्य आधिगम आधिगम कर्ता एक ही प्रकार के अथवा समान दो वस्तुओं के अधिक उद्दीपनों को सही-सही पहचानकर उसमे भेद कर सकता है। शिक्षण का विभेदात्मक आधिगम संकेत अथवा श्रृंखला (शाब्दिक कौशल आधिगम) की परिस्थितियाँ सम्मिलित है।

~~सम्प्रत्यय आधिगम~~ इस आधिगम परिस्थिति
प्रत्यय अधिगम के लिए विभेदात्मक आधिगम का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है।
आधिगम व्यक्ति में किसी वस्तु या घटना को एक वर्ग के रूप में अनुक्रिया करना सम्भव मानते हैं। उसे हम सम्प्रत्यय आधिगम कहते हैं।

सिद्धान्त आधिगम — इस स्तर आधिगम पर आधिगम कर्ता किसी नियम को सीखता है, और उसका नयी परिस्थितियों में प्रयोग करता है। यह नियम या सिद्धान्त आधिगम के दो या दो से अधिक सम्प्रत्ययो या श्रृंखला में सम्मिलित होता है।
जैसे - बर्फ का गर्मी पाकर "पिघलना" इस सिद्धान्त के तीन सम्प्रत्ययो "बर्फ" "गर्मी" "पिघलना" इस सिद्धान्त के बोध होता है।
समस्या का समाधान
द्विपक्षी प्रक्रिया के रूप में

आधिगम एक द्विपक्षीय प्रक्रिया के रूप में

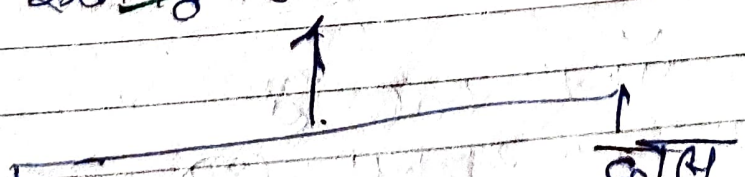

शिक्षक — आधिगम प्रक्रिया का स्थान महत्वपूर्ण है। आधिगम प्रक्रिया के रूप में
आधिगम द्विपक्षी प्रक्रिया के रूप में

Notes

सीखने के उद्देश्य

सीखने के उद्देश्य को मोटे तौर पर दो भागों में विभक्त किया गया है।

अ- ज्ञानोपार्जन ब कला अर्जन

अ ज्ञानोपार्जन — सीखने के उद्देश्य "ज्ञानोपार्जन" मे कई मत भेद हो सकता है। यह मत भेद मस्तिष्क के सीखने की ज्ञान को किस प्रकार विकसित किया जाय किस ढंग से सीखने की प्रक्रिया में वृद्धि की जाय ताकि ज्ञानोपार्जन हो सके।

1- प्रत्यक्षीकरण
2. प्रत्यक्ष या संकल्पना ज्ञान
3- साहचर्य से सीखना
4 रसानुभूति

(ब) कला अर्जन → इसमें हम संवेगात्मक, गामक प्रक्रियाओं को समझते हैं और उन्हे सीखते हैं। जैसे लिखना, पढना, ~~सीखना~~ संगीत, भाषा ज्ञान प्राप्त करना, चित्रकारी आदि

सीखने के स्तर -

सीखने के पाँच स्तर हैं
1- तथ्य 2. सूचना 3 ज्ञान प्राप्त करना
4. बोध, 5 प्रज्ञान

1 ~~तथ्य~~ :- सीखने का प्रथम स्तर - विवरण तथा प्रदत्त समाग्री जो कि निरीक्षण तथा अनुसंधान से प्राप्त होती हैं सबसे मौलिक ... सीखने का है।